टिप्पणी

धीरे-धीरे बात सामान्य हो जाती है। बहादुर के प्रति ऐसा ही व्यवहार होता है। बहादुर वाचक के परिवार के लिए घमंड और दिखावे का माध्यम है।

बहादुर बहुत काम करता है। पोंछा लगाता है, सफ़ाई करता है, बर्तन माँजता है, कपड़े धोता है। उसकी मेहनत से परिवार के लोगों को आराम मिलता है, फिर भी निर्मला उसके लिए रोटियाँ बनाना बंद कर देती है। कारण यह है कि मुहल्ले की किसी औरत ने निर्मला को समझा दिया है कि ''महीन खाने से इन लोगों की आदत बिगड़ जाती है।'' 'इन लोगों की' यानी नौकरों की। यह वाक्य निम्नवर्ग के प्रति मध्यवर्ग की मानसिकता को दर्शाता है।

इसी तरह बहादुर के पीटे जाने पर वाचक सोचता है कि ''कोई बात नहीं, नौकर तो पिटते रहते हैं।'' यह भी इस ओर संकेत करता है कि मध्यवर्ग के लोग नौकरों को जानवरों की तरह समझते हैं। निर्मला के रिश्तेदार द्वारा कहे गए अंग्रेज़ी वाक्य में भी मध्य और निम्नवर्ग के बीच के अंतर को देख सकते हैं। इस वाक्य से यह भी पता लगता है कि मध्यवर्ग का व्यक्ति कितना दिखावा करता है।

इस कहानी को पढ़ते समय हमारा ध्यान बाल-श्रम जैसी कुरीति की तरफ़ भी जाना चाहिए, जिसके कारण बहुत से शिक्षार्थियों को शिक्षा नहीं मिल पाती। यह आज हमारे लिए चिंता का विषय है। इसीलिए मजबूरी के शिकार बहादुर जैसे किशोरों को ध्यान में रखकर हमारे देश में बाल-श्रम कानून बनाए गए हैं। मानवाधिकार आयोग भी बच्चों की तरफ़ ध्यान दे रहा है और उनके पढ़ने-लिखने के अधिकार के पक्ष में माँग उठाता है। बच्चों या बाल-मज़दूरों से ख़तरनाक काम करवाने वालों और उनके प्रति हिंसा करने वालों के लिए दंड का भी प्रावधान है। आज बाल-श्रम एक अपराध है।

क्रियाकलाप-1.2

जब दिल्ली में बम-विस्फोट हुए, तो एक गुब्बारे बेचने वाले लड़के ने पुलिस को जीवित बम की सूचना देकर न जाने कितने लोगों की जान बचाई। आपकी दृष्टि में फुटपाथों पर काम करने वाले किशोर और क्या-क्या ज़िम्मेदारियाँ निभाते हैं, या निभा सकते हैं? यहाँ लिखिए:

.....

.....

.....

.....

टिप्पणी

1.2.5 भाषा-शैली

आइए, अब कहानी की **भाषा** की विशेषताओं का उल्लेख करते हैं। कहानी को पढ़ते हुए कहीं भी यह नहीं लगता कि इसकी भाषा कठिन या बनावटी है। हम कहानी को पढ़ते चले जाते हैं।

इस कहानी की भाषा पात्रों के व्यक्तित्व और उनके भावों के अनुकूल है। सभी पात्रों का बोलने का ढंग अलग-अलग है। इस ढंग से हमें इनकी विशेषताओं का पता लगता है। बहादुर 'तकलीफ़ बढ़ जाएगी' के स्थान पर 'तकलीफ़ बढ़ जाएगा', 'वह मारती क्यों थी?' के स्थान पर 'वह मारता क्यों था?' कहता है। वह नेपाल का रहने वाला है, इसलिए वैसी हिंदी नहीं बोल सकता, जैसी हिंदी क्षेत्र के लोग बोलते हैं।

निर्मला की भाषा घरेलू मध्यवर्गीय महिलाओं वाली है, जैसे – ''बहादुर आकर नाश्ता क्यों नहीं कर लेते? मैं दूसरी औरतों की तरह नहीं हूँ, जो नौकर-चाकर को तलती-भूनती हैं। मैं तो नौकर-चाकर को अपने बच्चे की तरह रखती हूँ।''

किशोर की भाषा देखिए – ''देख बे, मेरा काम सबसे पहले होना चाहिए। अगर एक काम भी छूटा, तो मारते-मारते हुलिया टाइट कर दूँगा।'' ऐसी भाषा का प्रयोग न वाचक कर सकता है, न निर्मला।

निर्मला के रिश्तेदार के व्यक्तित्व का पता अंग्रेज़ी के इस एक वाक्य से लग जाता है – ''यू डू नॉट नो, दीज़ पीपुल आर एक्सपर्ट इन दिस आर्ट।'' यही वाक्य हिंदी में होता, तो इसमें मध्यवर्ग का वह घमंड और नौकरों के प्रति घृणा न होती, जो अंग्रेज़ी में होने पर है।

जब हम किसी के दोषों पर चोट करते हैं, तो हमारी भाषा में व्यंग्य आ जाता है। इस कहानी की भाषा में व्यंग्यात्मकता है।

भाषा-प्रयोग–हमारी बोलचाल की भाषा की यह विशेषता होती है कि उसमें तत्सम, तद्भव, क्षेत्रीय और अनेक भाषाओं के शब्द चले आते हैं। उसमें हम मुहावरों का भी प्रयोग करते हैं। इस कहानी में ये सभी बातें मिलती हैं, जैसे–

स्रोत् के आधार पर शब्द के चार भेद हैं– **तत्सम, तद्भव, देशज और आगत**

- जो शब्द संस्कृत भाषा से ज्यों के त्यों लिए जाते हैं, वे तत्सम शब्द कहलाते हैं। जैसे– गंभीर, दायित्व, स्वच्छ, संतुष्टि, प्रफुल्लता, उत्साहपूर्ण, वातावरण, निस्संदेह, काल्पनिक, अनुमान आदि।
- संस्कृत भाषा के वे शब्द, जिनका हिंदी भाषा में आकर स्वरूप बदल जाता है, तद्भव शब्द कहलाते हैं। जैसे–आँखें, पुराना, भाई, बहन, खेत, घर, आँसू आदि। ये क्रमशः अक्षि, प्राचीन, भ्राता, भगिनी, क्षेत्र, गृह, अश्रु के परिवर्तित रूप हैं।

- वे शब्द, जो लोक में उत्पन्न और प्रयुक्त होते हैं देशज कहलाते हैं। जैसे—मलकाना, जून, चकइठ, खटना, शऊर, पुलई, बँसखट, तीता आदि।
- वे शब्द, जो अन्य भाषाओं— उर्दू, अंग्रेज़ी आदि— से आए होते हैं आगत शब्द कहलाते हैं। जैसे—हिदायतें, फ़रमाइश, फ़िक्र, तकलीफ़, गोया, तनख़्वाह, शान-शौकत, बरदाश्त, अफ़सोस, सुपुर्द टाइट, बस स्टेशन, साइकिल आदि।

मुहावरे –चारपाई तोड़ना, हाथ बँटाना, माथा ठनकना, गुस्से से पागल हो जाना, नौ दो ग्यारह हो जाना, सीधे मुँह बात न करना, फिरकी की तरह नाचना, पेट में लंबी दाढ़ी होना, कहीं का न रहना आदि।

कहानी कहने के तरीके को उसकी **शैली** कहते हैं, हमने देखा कि यह कहानी वाचक के जीवन का एक अनुभव है। घटनाएँ घट चुकी हैं। बहादुर वाचक के परिवार में आकर रहा और अब जा चुका है। जब कोई व्यक्ति अपने जीवन की घटनाओं का स्वयं उल्लेख कर रहा हो, तो वह आत्मकथा कहलाती है। इस कहानी में वाचक अपने जीवन की घटना सुना रहा है। वाचक याद करते हुए उसका किस्सा पाठकों को सुना रहा है, इसलिए इस कहानी में आत्मकथात्मक शैली मिलती है।

किसी व्यक्ति को याद करते हुए शब्दों के माध्यम से उसके व्यक्तित्व का एक चित्र हमारे सामने उपस्थित कर देना रेखाचित्र है। इस कहानी में रेखाचित्र-शैली को भी देखा जा सकता है, क्योंकि बहादुर के रूप-रंग आकार और उसके व्यवहार के कुछ विशिष्ट बिंदुओं को बताकर लेखक ने उसके व्यक्तित्व को उभारा है।

1.2.6 उद्देश्य

आप यह तो समझ ही गए कि इस कहानी का उद्देश्य क्या है अर्थात् लेखक कहना क्या चाहता है। इस कहानी में हमें बहादुर के व्यक्तित्व ने सबसे अधिक प्रभावित किया। उसके बाद किसने प्रभावित किया? क्या वाचक ने नहीं? वही तो आपको बहादुर के बारे में बता रहा है। उसका पश्चाताप या पछतावा उसकी सारी कमियों को दूर कर देता है। वाचक का यह पछतावा आरंभ से अंत तक चलता है। वह हमें यह अनुभव कराता है कि मध्यवर्गीय परिवारों का मासूम नौकरों के प्रति किया जाने वाला व्यवहार बहुत क्रूर होता है। हमें यह क्रूरता बुरी लगती है। बहादुर पर हुए अत्याचार का बुरा लगना — यही तो इस कहानी का उद्देश्य है।

इस कहानी में वाचक का पछतावा बहुत महत्त्वपूर्ण है। यह हमें इस बात के लिए तैयार करता है कि हम समाज में रहने वाले नौकरों के प्रति समानुभूति रखें, उन्हें अपने जैसा मनुष्य समझें, उन पर अत्याचार न होने दें। हमारा उनके प्रति समानुभूतिपूर्ण व्यवहार उनके जीवन की दिशा बदल सकता है और समाज भी अनेक समस्याओं से बच सकता है।

यहाँ हमने 'सहानुभूति' नहीं, बल्कि 'समानुभूति' शब्द का प्रयोग किया है; आइए, इन दोनों शब्दों के अर्थ को समझें:

टिप्पणी

सहानुभूति– किसी को दुखी देखकर स्वयं दुखी होना, हमदर्दी रखना।

समानुभूति– जब दूसरे का दुख अपना दुख बन जाए। दूसरे भी अपने जैसे लगें, अपने-पराये का भेद समाप्त हो जाए। दूसरे की अनुभूति में लीन होने की स्थिति। इस स्थिति में हम कष्ट को समाप्त करने का प्रयास करते हैं।

पाठगत प्रश्न-1.2

1. नीचे दिए गए वाक्यों में से सही के आगे सही (√) और गलत के आगे गलत (X) का निशान लगाइए :

   (क) संवाद कहानी घटना-क्रम को आगे बढ़ाते हैं, लेकिन पात्रों की विशेषताएँ नहीं बताते। ( )

   (ख) वाचक द्वारा पाठक से सीधे बातचीत किए जाने के कारण 'बहादुर' कहानी में संवाद अधिक है। ( )

   (ग) सामाजिक, आर्थिक, पारिवारिक स्थितियों एवं वातावरण के कारण व्यक्ति के व्यवहार पर प्रभाव पड़ता है। ( )

   (घ) मध्यवर्ग केवल रहन-सहन और खान-पान में ही दिखावा नहीं करता, भाषा के स्तर पर भी करता है। ( )

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

2. 'बहादुर' कहानी के अंत में क्या अभिव्यक्त नहीं होता?

   (क) घृणा ☐ (ख) पछतावा ☐

   (ग) दुख ☐ (घ) अपराध-बोध ☐

3. निम्नलिखित शब्द-समूह में से बेमेल शब्द-समूह को चुनिए :

   (क) **तत्सम**—निस्संदेह, वातावरण, अनुमान ☐

   (ख) **आगत**—सुपुर्द, हिदायत, तकलीफ़ ☐

   (ग) **तद्भव**—आँखें, खेत, बँसखट ☐

   (घ) **देशज**—तीता, पुलई, खटना ☐

4. 'बहादुर घर में **फिरकी की तरह नाचता रहता** था' का आशय है कि वह—

   (क) काम करने से बचने के लिए छिपता फिरता था। ☐

   (ख) दिन भर बहुत उछल-कूद मचाता रहता था। ☐

   (ग) मार खाने के कारण चीख-पुकार मचाता रहता था। ☐

   (घ) काम करने के लिए इधर से उधर दौड़ता रहता था। ☐

टिप्पणी

क्रियाकलाप-1.3

कहानी के आरंभ में आपने वाचक द्वारा बहादुर का रेखाचित्र पढ़ा। अपने किसी मित्र, परिजन या परिचित का चित्रण अपने शब्दों में कीजिए :

.....

.....

.....

.....

आपने क्या सीखा

- कोई भी निर्णय भावों के आवेग में या दूसरों के कहने पर नहीं, बल्कि ख़ूब सोच-विचार कर करना चाहिए।
- ईमानदार और मेहनती लोगों को स्नेह देना चाहिए, उनका सम्मान करना चाहिए।
- निम्न वर्ग की मजबूरियों और मध्यवर्ग की मानसिकता को मासूम बहादुर ही नहीं झेलता, बल्कि देश के न जाने कितने बहादुर यही मानसिक परेशानी उठाते हैं।
- मासूम नौकरों से आवश्यकता से अधिक काम लेकर भी उन पर झूठे आरोप लगाना, अत्याचार करना अपराध है।
- बहादुर जैसे लड़कों के साथ समानुभूति का व्यवहार करना चाहिए। उनसे भावनात्मक संबंध स्थापित करना चाहिए।
- कहानी की भाषा बोलचाल की है। संवाद और भाषा पात्रों के व्यक्तित्व की विशेषताओं के अनुकूल है। मुहावरों और तत्सम, तद्भव, देशज तथा उर्दू के प्रचलित शब्दों का आवश्यकता के अनुसार उपयोग किया गया है।

योग्यता-विस्तार

- इस कहानी के लेखक अमरकांत का जन्म 1 जुलाई, 1925 को ग्राम नगरा, ज़िला बलिया, (उ. प्र.) में हुआ। अमरकांत उन लेखकों में से हैं, जो 1942 के 'भारत छोड़ो आंदोलन' में शामिल हुए थे। इस विषय पर उन्होंने एक उपन्यास 'इन्हीं हथियारों से' लिखा है। अमरकांत के उपन्यासों में 'सूखा पत्ता' भी बहुत चर्चा में रहा है। उन्होंने बहुत-सा बाल और प्रौढ़-साहित्य भी लिखा है। कहानी-लेखन के क्षेत्र में उन्हें विशेष रूप से प्रसिद्धि मिली। यदि आप उनकी और कहानियाँ पढ़ना चाहते हैं, तो वे 'अमरकांत की संपूर्ण कहानियाँ' (दो भागों में) में संकलित हैं।

अमरकांत को अनेक पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है, जिनमें सोवियत लैन्ड नेहरू पुरस्कार, साहित्य अकादमी पुरस्कार और भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार शामिल हैं। वे आजकल इलाहाबाद में रहकर लेखन-कार्य कर रहे हैं।

- बाल-श्रम कानूनन अपराध है। इस संबंध में संशोधित कानून के बारे में जानकारी एकत्रित कीजिए।

पाठांत प्रश्न

1. वाचक के लिए नौकर रखना किन कारणों से आवश्यक था? आपकी दृष्टि में क्या वे कारण उचित थे? उल्लेख कीजिए।
2. 'बहादुर' कहानी के आधार पर मध्यवर्गीय परिवार की कुछ प्रवृत्तियों का उल्लेख कीजिए।
3. जब बहादुर को अपने घर की याद आती थी तो वह क्या करता था ?
4. बहादुर और किशोर के व्यवहार में अंतर के कारणों का विश्लेषण कीजिए।
5. निम्नलिखित का आशय स्पष्ट कीजिए :

   (क) उसकी हँसी बड़ी कोमल और मीठी थी, जैसे फूल की पंखुड़ियाँ बिखर गई हों।

   (ख) उन पहाड़ी गानों का अर्थ हम समझ नहीं पाते थे, पर उनकी मीठी उदासी सारे घर में फैल जाती, जैसे कोई पहाड़ की निर्जनता में अपने किसी बिछुड़े हुए साथी को बुला रहा हो।
6. बहादुर के व्यक्तित्व पर टिप्पणी कीजिए।
7. बहादुर कहानी की भाषा की प्रमुख विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।
8. निम्नलिखित शब्दों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

अभी – .....

अभी-अभी – .....

उछलकर – .....

उछल-उछलकर – .....

घूमकर – .....

घूम-घूमकर – .....

गाकर – .....

गा-गाकर – .....

टिप्पणी

9. निम्नलिखित शब्दों में से तत्सम, तद्भव, देशज और आगत शब्दों को छाँटिए:— संतुष्टि, खेत, मलकाना, तकलीफ़, स्वच्छ, पेड़, शहर, तनख़्वाह।

उत्तरमाला

बोध प्रश्नों के उत्तर

1. (ग), 2. (ग) 3. (ख)

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

1.1 1. (घ) 2. (ग) 3. (घ) 4. (घ)

1.2 1. (क) (X), (ख) (X), (ग) (√), (घ) (√),
2. (क) 3. (ग), 4. (घ)